1. बीरबहूटी PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बादल बरसना – वर्षा होना 2. बहुत सारा पानी बादलों में बचा हुआ था – आगे भी वर्षा होगी

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?

साहिल और बेला

2. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे । क्यों?

बीरबहूटियों से मिलने केलिए

3. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे ?

बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में

4. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं ?

बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं ।

5. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे ?

एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर

6. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत ।

समय – सुबह 9 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है । चेहरे पर खुशी है ।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं ।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा । इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है ।

बेला - ठीक है । ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ... ।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है । तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है ।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है ।

बेला - ठीक है साहिल । तो जल्दी चलें ।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं ।)

7. वार्तालाप को आगे बढाएँ ।

साहिल - तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना । पहली घंटी लग गई है ।

साहिल - पहली घंटी किसकी है ?

बेला - हिंदी की, तूने गृहकार्य पूरा किया है क्या ?

साहिल - हाँ, लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है ।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाया तो ?

साहिल - ऐसा नहीं होगा यार, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है ।

बेला - क्या, कलम में स्याही बिलकुल नहीं है ?

साहिल - कुछ स्याही थी, पर मैंने उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

बेला - ऐसा क्यों किया तूने ?

साहिल - नई स्याही भरवाने केलिए पैन को खाली किया ।

बेला - दुकान में स्याही नहीं है तो ?

साहिल - दुकान में स्याही ज़रूर होगा ।

बेला - तो हम जल्दी चलें ।

साहिल - ठीक है, बेला ।

SREEJITH K, KOVOOR VARKALA, SCRIPT, ph- 9567224545

8. टिप्पणी – सच्ची मित्रता

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है। दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है। एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है। दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती। असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं। सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है। सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता। वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं। सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती। सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है। समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है।

9. बेला की डायरी (बीरबहूटी की खोज)

तारीख : ……

स्कूल केलिए निकली। साहिल के साथ। खेत गई। बस्ते पीठ पर लदे थे। ज़मीन पर बैठ गए। खेत में बीरबहूटियों को खोजने लगे। कुछ दिखाई भी दिए। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ। धरती पर चलती – फिरती खून की प्यारी – प्यारी बूँदें। स्कूल की पहली घंटी लग गई। साहिल को पैन में स्याही भरवानी थी। दुकान की ओर चले।

10. मित्र के नाम साहिल का पत्र (बीरबहूटियों की विशेषताएँ)

स्थान : ……

तारीख : ……

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

हमारे इलाके में अब बारिश का मौसम चल रहा है। कस्बे से सटे सारे खेत बीरबहूटियों से भर गए हैं। स्कूल में आते-जाते समय मैं अपनी सहेली बेला के साथ मिलकर उन्हें खोजते हैं। तुमने कभी सुना है बीरबहूटियों के बारे में ? ये बहुत सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं। उन्हें देखकर धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें जैसे लगती हैं। सचमुच उन्हें इस तरह लाल रिबन जैसे कतार में खडे होते देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। उन्हें खोजते रहने पर समय काट जाने का कोई अंदाज़ नहीं होगा। रविवार की छुट्टी में तुम यहाँ आना, हम साथ मिलकर उन्हें खोज लेंगे। तब तुम्हें पता चलेगा कि ये कितने मनमोहक हैं।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

11. पोस्टर (संगोष्ठी) – सच्ची दोस्ती

सरकारी जी. एच. एस. एस, कोल्लम

संगोष्ठी

विषय - सच्ची दोस्ती

आयोजन - हिंदी मंच

2021 जनवरी 29, शुक्रवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल

प्रस्तुति – हिंदी अध्यापक

सच्चे मित्र सच्चे मार्गदर्शक
सच्ची दोस्ती अनमोल संपत्ति

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...

सबका स्वागत

1. बीरबहूटी PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कॉपी में काम करना – नोटबुक में लिखना
2. बुरे मन से बताना – असंतृप्त होकर बताना
3. बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना - सोच विचार करके काम लेना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. बेला और साहिल दुकान क्यों गये ?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. ‘ अब तो कल ही मिल पाएगी।‘- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी।
3. ‘ पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे। पर उन्हें निराशा लौटना पडा।‘- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी। इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा।
4. साहिल ने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर क्यों छिडक दिया था ?
   साहिल बेला के साथ पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान जा रहा था। इसलिए उसने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया था।

SREEJITH K, KOODOOR VARKALA, SCRHS M- 9562224545

5. पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया। ऐसा करना उचित है ? अपना मत प्रकट करें।

ऐसा करना उचित नहीं है। अगर दुकान जाने के बाद वहाँ स्याही है, यह निश्चित कर ऐसा करें तो परवाह नहीं होता।

6.' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?

साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया। दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी। तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा। कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है। बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए।

7. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान।

समय - सुबह 10 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है।
3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं।

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो।

दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है। अब तो कल ही मिल पाएगी।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?

दुकानदार - पैन में थोडी भी स्याही नहीं है।

बेला - नहीं भैया। पैन में थोडी स्याही थी। इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए।

साहिल - हाँ गलती हुई।

दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो ?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में।

दुकानदार - दोनों ?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं। स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं।

दुकानदार - अच्छा। तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी।

बेला - ठीक है भैया।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं।)

8. स्याही न मिलने पर साहिल निराश हुआ। जाते वक्त साहिल और बेला के बीच का वार्तालाप

बेला - साहिल अब हम क्या करेंगे ?

साहिल - चलो, किसीसे उधार लेंगे।

बेला - काश ! तूने पैन में बची स्याही को न छिडाए तो आज कुछ लिख सकता था न ... ?

साहिल - क्या करूँ यार ? दुकान जा रहा था न, इसलिए ...

बेला - दुकानदार का कहना याद है न ?

साहिल - हाँ याद है। आगे कभी मैं ऐसा नहीं करूँगा। आज का पहला पीरियड किसका है ?

बेला - हिंदी की, तूने गृहकार्य पूरा किया है क्या ?

साहिल - हाँ किया।

बेला - तो जल्दी चलो, अध्यापक क्लास में घुसने से पहले जाकर किसीसे पैन पूछ लेना।

साहिल - ठीक है यार।

9. बेला की डायरी (पैन में स्याही)

तारीख : ……

खेत में बीरबहूटियों को देख रही थी। साहिल भी थी। स्कूल की पहली घंटी बजी। साहिल के पैन में थोडी स्याही थी उसने उसे ज़मीन पर छिडक दिया। स्याही भरवाने दुकान गए। दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी। बहुत निराश हुए। ' बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ' दुकानदार का उपदेश भी सुना। कितना नटखट है यह साहिल।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

1. बीरबहूटी PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. नज़र मिलाना - मुँह की ओर देखना/ चेहरे पर देखना 2. शर्मिंदा महसूस करना - लज्जित होना/ अपमानित होना 3. मन खराब होना – मन उदास होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. माटसाब ने बेला के बालों में पंजा क्यों फँसाया ?
   उसकी कॉपी गलती पाकर
2. माटसाब ने बेला को क्यों छोड दिया ?
   कॉपी में गलती न होने से
3. साहिल क्यों बुरी तरह डर गया ?
   बेला के भयभीत चेहरे को देखकर
4. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी । क्यों ?
   क्योंकि साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया ।
5. बेला साहिल से नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?
   क्योंकि उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने अकारण बालों में पंजा फँसाकर उसको अपमानित किया ।
6. बच्चे सुरेंदर माटसाब से क्यों डरते थे ?
   कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर वे बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।
7. खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही बच्चे अपनी–अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे। क्यों ?
   खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था।
8. ‘ गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।‘ - उसपर अपना विचार लिखें ।
   छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।
9. ‘ बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।‘- इसके क्या–क्या कारण हैं ?
   बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।
10. ‘ माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।‘- बेला ऐसा क्यों सोचती है ?
   बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है । साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी । इसलिए वह ऐसा सोचती है ।
11. ‘ बेला का मन बहुत खराब हो गया ।‘- क्यों ?
   साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।
12. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?
   बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

13. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या ?

बेला - फिर मैं क्या करूँ ?

साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं ।

बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी । फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।

साहिल - हाँ, वे भी जानते थे । इसलिए तुम्हें छोड दिया ।

बेला - मैं सचमुच डर गई थी ।

साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था ।

बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी ।

साहिल - मुझे भी एसा लगा ।

बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ ... सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे ... पर ।

साहिल - तुम इस घटना को भूलो ।

बेला - पर ... मैं दुख सह न पाती । घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी ।

साहिल - ज़रूर बताना । अब खुशी से घर जाओ ।

बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी ।

HSSLiVE.IN

REJITH K, KOVOOR VARKALA, SCR/LP Ph- 9567245445

14. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो ?

बेला - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई ।

माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?

बेला - नहीं । गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।

माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी ।

बेला - नहीं माँ । मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था ।

माँ - छोड दो । मास्टर जी है न ?

बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी ।

माँ - कोई बात नहीं । वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है ।

15. सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का जिक्र करते हुए

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

आज स्कूल में एक घटना हुई । तीसरी पिरीयड गणित का था । गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे । आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे । तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी । उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं डर से काँप रही थी । उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी । फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया । तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं । उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है । वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता । नाम

16. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : .....

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

17. रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान : ..... फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता दिखाई । कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा । लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया । उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी । छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं है । कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं । कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी । बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है ।

18. चरित्रगत विशेषताएँ - गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेंदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे । स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे । इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे । वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे । ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना, बालों में पंजा फँसाना, कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं । भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे । छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी । बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी । बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे ।

19. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है । उसका दोस्त है साहिल । दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है । एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर दोनों अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं ।

SREENIVAS KOVOOR VARKALA, SCR145 M-9515724545

1. बीरबहूटी PART 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – व्याकुल होना/ दुखित होना 2. ज़िद करना – हठ करना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों गए थे ?
लंगडी टाँग खेलने केलिए

2.‘ नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो ’- यहाँ साहिल का कौन–सा मनोभाव स्पष्ट होता है ?
बेला से उसकी अंतरंग मित्रता का ।

3. बेला को बच्चे क्यों चिढा रहे थे ?
बेला के सिर पर चोट लगने के कारण सफेद पट्टी बाँधी थी । इसलिए बेला को बच्चे चिढा रहे थे ।

4. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी ?
छत से गिर जाने के कारण

5. बेला के सिर पर सफेद पट्टी क्यों बाँधी थी ?
क्योंकि छत से गिर जाने के कारण उसके सिर पर चोट लगी थी ।

6. ‘ गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।‘- इसका कारण क्या होगा ?
अपने चारों ओर हँसते-खेलते बच्चों को देखकर

7.‘ इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।‘- इसका मतलब क्या है ?
गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

8. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?
दीपावली की छुट्टियों के बादस्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

9. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।

दृश्य का विवरण– दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?
बेला - (हँसकर) छत से गिर जाने से चोट लग गयी ।
साहिल - यह कब हुआ ?
बेला - बहुत दिन हो गए ।
साहिल - अब दर्द है क्या ?
बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।
साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?
बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।
साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।
(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

10. साहिल का पत्र (गाँधी चौक का खेल)

स्थान : .....
तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCERT KS Ph. 9567224545

1. बीरबहूटी PART 5 (रविवार का दिन, साहिल पिंडली में चोट लगने अस्पताल में)

1. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. साहिल को क्यों अस्पताल ले जाया गया ?

उसकी पिंडली में कील लगने से हुई चोट को पट्टी बँधवाने केलिए

2. बेला क्यों अस्पताल आई है ?

सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

3. साहिल की पिंडली में चोट कैसे लगी कैसे ?

रविवार के दिन साहिल अपने घर में स्कूल पर चढकर नीम के पेड की डाली पकडकर झूम रहा था । तब टूटे स्टूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गई । इस प्रकार उसकी पिंडली में चोट लगी ।

4. बेला की डायरी (अस्पताल में जाना, वहाँ साहिल को देखना)

तारीख : .....

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी । तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा । वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था । स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई । एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था । उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था । ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था । बहुत मुश्किल से खडा था । बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी । पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें । अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में ।

5. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?

साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं । कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे ।

बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?

साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है ।

बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है । बाई ।

साहिल – ठीक है बेला, बाई ।

6. पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस. कोल्लम
मशहूर कथाकार प्रभात की
पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की
सच्ची मित्रता की कहानी
बीरबहूटी
एकांकी के रूप में
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - नवीन, दसवीं कक्षा
निदेशन – श्री. वरुण, हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति – छात्र-छात्राएँ, दसवीं कक्षा
आइए... देखिए...मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत

HSSLiVE.IN
SREEJITH K KOVOOR VARKALA, SCRIPS Ph- 9567021545

1. बीरबहूटी PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई)

1. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. छठी कक्षा में साहिल और बेला कहाँ पढेंगे ?

छठी कक्षा में साहिल अजमेर में पढेगा और बेला राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

2. बेला और साहिल अब फुलेरा के स्कूल में नहीं पढ सकते । क्यों ?

उनका स्कूल पाँचवीं तक था । वे दोनों अब छठी में आ गए ।

3. बेला और साहिल का दोस्ती क्यों छूट जाती ?

क्योंकि दोनों आगे की पढाई केलिए अलग-अलग स्कूल जाते हैं ।

4. साहिल और बेला के बिछुडन का कारण क्या है ?

फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था ।

5. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडा ?

साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है । इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है ।

6. परीक्षा पास होने पर भी बेला और साहिल की आँखों से आँसू आये । क्यों ?

साहिल और बेला पहली बार अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं । यह सोचते समय दोनों की आँखों से आँसू आए ।

7. साहिल की आँखें क्यों लाल हो गईं ?

बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं । वे यह सहन नहीं सकते थे । दोनों रोने लगे । इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं ।

8. ' आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे ।'- इससे आपने क्या समझा ?

पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं । इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे,मिल न पाएँगे । इसलिए ऐसा कहा होगा ।

9. ' यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था ।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?

हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं । इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं । यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी ।

10. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

11. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान – फुलेरा कस्बे की एक गली ।

समय – सुबह 11 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है ।

दृश्य का विवरण – दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं ।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?

बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं ।

साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?

बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में । और तुम ?

साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा ।

बेला - क्यों साहिल ?

साहिल - पता नहीं क्यों ?

बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?

साहिल - नहीं यार । तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCANS ph 9562245345

बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?

साहिल - मुझे भी नहीं पता।

बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?

साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे।

बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे।

साहिल - ठीक है बेला।

(दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं।)

12. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता।

समय - सुबह के 10 बजे।

पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है।

घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है। वे आपस में बातें करने लगे।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना।

बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)

साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?

बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?

साहिल - मुझे भी नहीं पता।

बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?

साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे।

बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे।

साहिल - ठीक है बेला।

(दोनों अलग-अलग रोस्ते से चले जाते हैं।)

13. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप

माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो।

साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?

माँ - नहीं बेटा। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।

साहिल - मैं अजमेर में। ऐसा है न माँ ?

माँ - हाँ बेटा। तुम्हारे पिता ने कहा था।

साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?

माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा।

साहिल - मुझे नहीं लगता। क्या बेला मुझे भूलेगा ?

माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा।

साहिल - ठीक है माँ।

14. वार्तालाप – साहिल और बेला (बिछुडन के बाद)

बेला - अरे साहिल, कैसे हो तुम ? नया स्कूल कैसा है ?

साहिल - ठीक हूँ। स्कूल भी अच्छा है, लेकिन मैं वहाँ अकेला हूँ।

बेला - कोई दोस्त नहीं ?

साहिल - दोस्त अनेक हैं, लेकिन तेरे जैसे कोई नहीं।

बेला - मेरी हालत भी तेरी जैसी है। तेरे जैसे दोस्त मुझे भी नहीं।

साहिल - क्या करें हम ?

बेला - पता नहीं। लेकिन खुशी की एक बात है। सुरेंदर जी जैसे माटसाब वहाँ नहीं।

साहिल - तेरी आँखों में आँसू क्यों बेला ?

बेला - पता नहीं। और तेरी आँख में ... ?

साहिल - मुझे भी पता नहीं। हम दोनों समान दुखी हैं।

SREEJITH K, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

15. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ……

आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था। कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये। अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ। आज संतोष के साथ दुख भी है। बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया। आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा। मेरी भी आँखें भर गई थीं। बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा। वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी। फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था। वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी।

16. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : **……**

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था। मैं और साहिल पास हो गए। मैं बहुत खुश हूँ **…** साथ-साथ दुखी भी। क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी। अगले साल वह अजमेर जाएगा। उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए। कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी।

17. बेला की डायरी (नए स्कूल के पहले दिवस की)

तारीख : **……**

मैं बहुत उदास हूँ। आज साहिल के बिना स्कूल का पहला दिवस था। आज से हम अलग-अलग स्कूल में हैं। स्कूल में नए दोस्तों को मिला। लेकिन साहिल के सामने ये कहाँ? साहिल ही मेरा सच्चा दोस्त है। मैं सदा हमारी दोस्ती के बारे में सोचती हूँ। मैं फिर कब साहिल से मिलूँगी ? हम कब बीरबहूटियों को ढूँढेंगे? हम कब एकसाथ खेलेंगे? इन विचारों से पढने को भी मन नहीं लगता है। सुरेंदरजी हमें पीट लेते तो भी कोई परवाह नहीं था। आज ही साहिल को एक पत्र लिखना है। साहिल भी वहाँ दुखी होगा। मेरा पत्र उसको आश्वासन देगा। मैं अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा में हूँ।

18. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान : ……

तारीख : ……

प्रिय साहिल,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, तुम्हारे नए स्कूल के बारे में जानने और मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नया दोस्त मिला है क्या ? हॉस्टल स्कूल के पास ही है न? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है। वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं। मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं। पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ?

वहाँ की सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना। अगली छुट्टी में हम मिलें। तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारी सहेली

नाम (हस्ताक्षर)

पता। नाम

19. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ……

तारीख : ……

प्रिय बेला,

तुम कैसी हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ।

परसों मैं इधर पहुँचा। यात्रा बहुत मुश्किल थी। गाडी में बडी भीड थी। कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई। स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है। बडा स्कूल है। बडे बडे कमरे और मैदान। आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है। कल सुबह स्कूल खुलेगा। होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं। कमरे में मेरा सहवासी है गणेश। वह आगरा से है। स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है। यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं। कल शाम हम घूमने गए। इलाका बहुत सुंदर है। फुलेरा कितना छोटा है। यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं। यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं।

आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा। वहाँ की सारी बातें विशद रूप से लिखना। अगली छुट्टी में हम मिलें। तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता। नाम

SREENIVAS KOVOOR VARKALA, 9087455 W-9539224515

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART -1 (कविता)

1. इसका मतलब क्या है ?

1. हाथ बढाना - सहायता करना 2. साथ चलना - मिलकर चलना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. ' व्यक्ति को मैं नहीं जानता था '- इसमें ' **मैं** ' कौन है ?
   विनोद कुमार शुक्ल
2. कवि ने रास्ते पर किसको देखा ?
   अपरिचित/ हताश व्यक्ति को
3. कवि हताश व्यक्ति के पास क्यों गया ?
   क्योंकि कवि उसकी हताश को जानता था ।
4. व्यक्ति की हालत समझकर कवि ने क्या किया ?
   कवि ने उस व्यक्ति के पास गया और सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाया ।
5. कवि ने उस व्यक्ति के सामने क्यों हाथ बढाया ?
   व्यक्ति की समस्या पहचानकर उसकी सहायता करने केलिए
6. हताश व्यक्ति ने कवि का हाथ क्यों पकडा ?
   क्योंकि वह कवि के हाथ बढाने को जानता था ।
7. कवि ने हाथ बढाया तो उस व्यक्ति ने क्या किया ?
   व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
8. ' मेरा हाथ पकडकर वह खडा हुआ ।'- यहाँ ' **वह** ' कौन है ?
   अपरिचित/ हताश व्यक्ति
9. ' हम दोनों साथ चले'- कौन-कौन साथ चले ?
   कवि और हताश व्यक्ति
10. ' वे दोनों साथ चले । '- क्यों ?
    क्योंकि दोनों साथ चलने को जानता था ।
11. कविता किसकी याद दिलाती है ?
    मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की
12. मुसीबत में पडे लोगों को किसकी ज़रूरत है ?
    हमारी मदद की
13. कविता में कवि का कौन सा मनोभाव प्रकट है ?
    मनुष्य में मानवीय संवेदना का या मनुष्यता का बोध होना अनिवार्य है ।
14. कविता का संदेश क्या है ?
    दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं ।
15. ' व्यक्ति को न जानना ' और ' हताशा को जानना ' का अर्थ क्या है ?
    व्यक्ति को न जानना - हमें किसीको व्यक्तिगत रूप से यानी उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि से जानना नहीं चाहिए ।
    हताशा को जानना - हमें किसीको उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना चाहिए ।
16. ' अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की ।'- इससे क्या संदेश मिलता है ?
    किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है । दो मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना चाहिए ।

17. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं । इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं ।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं । इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं । कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ । कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था । दोनों साथ-साथ चले । यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने । कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं । लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा । किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है । मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है । यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है । कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं ।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है । कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है । गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है । यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है । जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है ।

HSSLiVE.IN
SREEJITH K, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

18. व्यक्ति को जानने के संबंध में कवि के मत पर टिप्पणी

श्री. विनोद कुमार शुक्ल द्वारा लिखित हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था नामक कविता में प्रस्तुत प्रसंग आता है। कविता द्वारा कवि ने जानना शब्द के रूढीग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया है। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

19. टिप्पणी – समाज में हताशा से जीवन बितानेवालों को साथ लेना है

समाज में सभी सदस्य एक समान नहीं। यहाँ खुशी से जीवन बितानेवाले और हताशा से जीवन बितानेवाले हैं। हमें व्यक्तियों के नाम, जाति आदि के बारे में नहीं सोचना है। एक व्यक्ति को हताश देखें तो उसकी सहायता करने का मन होना है। हाथ बढाकर उसकी हताशा को दूर करना है।

20. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता के आधार पर कवि विनोद कुमार शुक्ल की डायरी तैयार करें।

तारीख : .....

आज मैं दुकान की ओर चल रहा था। तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा। वह निराश दिख पडा। उसे मैं नहीं जानता था। मैं उसके पास गया। मैंने उसकी ओर हाथ बढाया। वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला। हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था। किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं। मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा।

21. कवि ने रास्ते पर एक अपरिचित व्यक्ति को देखा। वह निराश था। कवि ने उस व्यक्ति के पास जाकर अपना हाथ बढाया। प्रस्तुत प्रसंग पर कवि और अपरिचित व्यक्ति के बीच होनेवाले संभावित वार्तालाप तैयार करें।

कवि - (हाथ बढाकर) आप उठिए।

व्यक्ति – क्या, आप मुझे जानते हैं ?

कवि - बिलकुल नहीं।

व्यक्ति – फिर क्यों मुझे उठाते हैं।

कवि - आप निराश हैं, यह मैं जानता हूँ।

व्यक्ति – यह आपको कैसे समझ गया ?

कवि - मुझे भी पहले निराशा का अनुभव हुआ था। इसलिए आपको देखते ही मुझे मालूम हो गया।

व्यक्ति – आपका यह स्वभाव मुझे बहुत प्रभावित किया।

कवि - क्या, हम कुछ दूर चलें ?

व्यक्ति – ठीक है, जी।

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART - 2 (टिप्पणी)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. रोक देना – बंद करना 2. बयान करना – विवरण देना 3. मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना – सहानुभूति का भाव अपनाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. किसीको जानने केलिए हमें क्या करना चाहिए ?
   हमें उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना चाहिए।
2. ‘ जानना ‘ शब्द का परंपरागत अर्थ यानी हमारी जानी-पहचानी रूढी क्या है ?
   व्यक्ति को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानना।
3. ‘ जानने ’ का असली आधार क्या है ?
   व्यक्ति को उसकी हताशा से जानना
4. कवि की राय में व्यक्ति को कैसे जानना है ?
   व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से जानना है।
5. सडक पर घायल पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर हमें क्या करना चाहिए ?
   उसकी मदद करनी चाहिए।
6. हमें किन-किन व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए ?
   हताश, असहाय और संकट में पडे
7. कविता पर टिप्पणी लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
   कवि और कविता का परिचय, कविता का आशय, भाषापरक विशेषताएँ और कविता की प्रासंगिकता पर अपना विचार।
8. मनुष्य को जानने केलिए हमें उसकी हताशा को जानना है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
   जानना शब्द की लेखक की व्याख्या अत्यंत अजीब और विशाल है। उनके मत में किसी व्यक्ति को जानने का अर्थ उसका नाम, उम्र, पता, ओहदा, जाति आदि को जानना नहीं, बल्कि उसकी हताशा, निराशा, असहायता और संकट को जानना है। किसी मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति पर कृपा दृष्टि डालकर उसकी मदद करना सच्चा मनुष्य का कर्तव्य है। मनुष्यों के बीच मनुष्यता से व्यवहार करना ही जानने का सच्चा अर्थ है।

SRGHHS, KOVOOR VARKALA, SCR145 Ph- 9562224515

9. घायल पडे व्यक्ति के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

घायल पडे व्यक्ति को किसी का मदद की सख्त ज़रूरत है। अत : उसकी जानकारी के बिना सहायता करना अनिवार्य है।

10. दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं। यहाँ कवि क्या कहना चाहते हैं ?

कवि कहना चाहते हैं कि दो मनुष्यों के बीच सिर्फ जानकारियाँ होने से कुछ फायदा नहीं, मनुष्यता का व्यवहार होना ज़रूरी है। किसी व्यक्ति को उसके नाम, जाति, पता. पिता का नाम आदि जानने से कोई फायदा नहीं, व्यक्ति की निराशा, हताशा, असहायता या संकट जानना ही महत्वपूर्ण है।

11.' जानना ' शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। अकसर हम दूसरों को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से ही जानते हैं। लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए। उसकी हताशा, असहायता, दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता।

12. कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या–क्या निरीक्षण हैं ?

लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष एकदम बारीक है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध भी खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत या गज़ल जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। ' जानता था ' और ' नहीं जानता था ' का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

13. टिप्पणी – जानना शब्द की लेखक की व्याख्या

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। यहाँ लेखक ने जानना शब्द की हमारी उस जानी-पहचानी रूढी को तोड दिया है, जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है। प्रस्तुत टिप्पणी में लेखक ने जानना शब्द को नए ढंग से परिभाषित किया है। इस व्याख्या के पीछे लेखक का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिकता को जानने से है। जैसे अगर कोई व्यक्ति सडक पर घायल अवस्था में पडा है, तो हमें मदद करनी चाहिए। क्योंकि दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है – जानकारियाँ का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

14. रपट - सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा। किसीने उसकी सहायता नहीं की। बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा। उसके शरीर से खून बह रहा था। उसका एक हाथ टूट गया था। सिर पर भी चोट लग गई थी। उसकी हालत बहुत नाजुक थी। बहुत लोग उसके पास से गुज़रे। पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की। कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे। भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया। उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई। इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं। वे अपने–अपने बारे में ही सोचते हैं। दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं। यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है।

15. टिप्पणी- मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है। यह कविता जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख –दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा। यानी एक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं। उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है। मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है। व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है। अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

16. टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है। अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं। मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं, इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा। जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है। हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है, वही सच्चा मानव है। दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए। हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं। ऐसे लोग अमर बन जाते हैं। हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे। संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए।

17. टिप्पणी – मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य में मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है। किसी व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि को जानने की ज़रूरत नहीं है। उसकी हताशा, निराशा, असहायता, संकट आदि को जानना ही काफी होगा। यदि किसी व्यक्ति को इन बातों से हम नहीं जानते तो उस व्यक्ति के बारे में हम कुछ नहीं जानते। दुख-दर्द और एहसास सबके एक जैसे होते हैं। उसे समझने केलिए किसीको वैयक्तिक रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है, जानकिरियों का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

SOBHITH P, KOVOOR, VARKALA, SCERT KERALA, 9447022455

18. लेख- अवयव/ अंगदान का महत्व

अवयवदान जीवन का महादान है। हम 13 अगस्त को विश्व अवयवदान दिवस मनाते हैं। मरने के बाद और जीते जी कुछ लोग अपने अवयवों को दान करने केलिए तैयार होते हैं। हमें अपने अवयवों को दान करने से अनेकों के जीवन बचा सकते हैं। आँख, किड्नी, हृदय, फेफडा, जिगर आदि शरीर अंग हम दान कर सकते हैं। इससे हम कुछ लोगों के अंधकार में डूबी ज़िंदगी को प्रकाशमय बना सकते हैं। रक्तदान से किसी ज़रूरतमंद की जान हम बचा सकते हैं। कुछ लोग मृत्यु के बाद अपने शरीर मेडिकल विद्यार्थियों को देने का निश्चय करते हैं। ऐसे लोग मरने के बाद भी समाज केलिए काम आते हैं। इसलिए हम भी अंगदान में शामिल हो जाएँ और कोई दूसरे की ज़िंदगी को बचाएँ।

19. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1. अंगदान जीवन दान ...
   अंगदान जीवन में मुस्कान।
2. अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान ...
   स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान।
3. अंधविश्वास को छोडिए ...
   अंगदान में सहयोग दीजिए।
4. मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण ...
   आगे बढिए और कीजिए अंगदान।
5. करो दान किड्नी, नेत्र, हृदय, जिगर और देह की ...
   अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें।
6. जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान
   और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

20. पोस्टर (points)संदेश – सडक पर घायल पडे लोगों की जान बचाना मनुष्यता है

1. घायलों को जल्दी जल्दी पहुँचाएँ अस्पताल
   रक्त बहाकर उन्हें वहाँ पडने न दें
2. सडक पर घायल पडे को बचाना मनुष्यता है
   हरेक व्यक्ति की जान कीमत है
3. घायल पडे लोगों को देखे बिना गुज़रना नहीं चाहिए
   मोबाइल पर फोटो खींचने पर नहीं,
   उसकी रक्षा करने में हमारा ध्यान होना चाहिए।
4. घायल पडे की जान बचाएँ
   उनके घर का प्रकाश मिटने न दें
5. ध्यान रखें, उसे देखे बिना जाने वाले आपको ही
   यही हालत होने की संभावना है
6. घायलों का फोटो खींचकर लैक मिलने में नहीं
   उसपर मनुष्यता दिखाने में होना है हमारा ध्यान

21. पोस्टर – रक्तदान का महत्व

रक्तदान जीवनदान

1.रक्तदान को बनाइए अभियान,
   रक्तदान करके बचाइए जान।
2. रक्त के मोल को जानो,
   उसमें छुपी जिंदगी को पहचानो।
3. रक्तदान कीजिए
   राष्ट्रीय एकात्मता बढाइए।
4. आपके रक्तदान के कुछ मिनट का मतलब है
   किसी ओर केलिए पूरा जीवनकाल।
5. रक्तदान इंसानियत की पहचान,
   आओ करो रक्तदान।
6. रक्तदान अपनाओ
   सबका जीवन बचाओ।
7. रक्तदान करने से नहीं होती शरीर में कमज़ोरी,
   रक्तदान करने में कभी मत करना सोची समझी।
8. मानवता के हित में काम कीजिए
   रक्तदान में भाग लीजिए।

विश्व रक्तदान दिवस – जून 14

22. पोस्टर (points)संदेश – सडक सुरक्षा

1. यातायात की सुरक्षा नियमों में सख्ती
   तभी मिलेगी, दुर्घटनाओं से मुक्ति
2. सुरक्षित जब रहेंगे आप
   तभी दे पाएँगे अपनो के साथ
3. दुपहिये वाहन पर तीन सवारी न बिठाएँ
   गाडी चलाते वक्त ज़्यादा मस्ती करना खतरा है।
4. शराब पीकर गाडी न चलाएँ
   गाडी चलाते वक्त मोबाइल, धूम्रपान आदि न कराएँ
5. सडक पर वाहन धीमा चलाये, तेज़ रफ्तार से नहीं
6. चौपहिया वाहन चालक सदैव सीट बेल्ट पहने
   दुपहिया वाहन चालक हेलमेट
7. सही दिशा से ओवरटेक करें
   हरेक जीवन अनमोल है
8. रेलवे पटरियों को पार करते वक्त रेलवे क्रॉसिंग का उपयोग करें
9. 18 साल के कम उम्र के बच्चे गाडी चलाना कानूनी जुर्म है।

SREEMATI RAVINDER VARMA, SCERT, Ph- 9560224545

3. टूटा पहिया PART -1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. पहिया - चक्र 2. चुनौती - ललकार 3. टूटा - तोडा/ छिन्न भिन्न 4. दुरूह - समझने में कठिन/ रहस्यमय 5. व्यूह - श्रेणी
6. सेना - सैन्य 7. अक्षौहिणी सेना – चतुरंगिणी सेना 8. दुस्साहसी - अति साहसी/ अनुचित रूप में धैर्य दिखानेवाला

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1.मत फेंकना – नहीं छोडना/ उपेक्षा नहीं करना 2. चुनौती देना – ललकार देना 3. घिर जाना – फँस जाना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. दुरूह चक्रव्यूह - दुरूह 2. दुस्साहसी अभिमन्यु - दुस्साहसी 3. अक्षौहिणी सेना – अक्षौहिणी 4. टूटा हुआ पहिया - टूटा हुआ

4. किसका प्रतीक है ?

1. टूटा पहिया – उपेक्षित लघु मानव/ टूटे हुए मानवीय मूल्य/ उपेक्षित सामान्य मनुष्य/ आम जनता/ शोषितों की आवाज़
2. चक्रव्यूह – जीवन की समस्याएँ / जीवन की विषमताएँ/ वर्तमान संसार / जटिल समस्या
3. अभिमन्यु – शोषण से पीडित आम जनता/ साहसी युवा पीढी/ अधर्म का विरोधी/ चुनौतियों का सामना करनेवाला
4. अक्षौहिणी सेना – अधर्मियों का संघ/ शोषण की व्यवस्था
5. रथ – जीवन

5. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता में **मैं** का प्रयोग किस केलिए किया गया है ?
   टूटा पहिया
2. ' लेकिन मुझे पेंको मत ' यह किसकी प्रार्थना है ?
   टूटे पहिये की
3. कवि के मत में अक्षौहिणी सेनाओं को कौन चुनौती देगा ?
   अभिमन्यु
5. टूटा पहिया किसका सहारा बन सकता है?
   किसी दुस्साहसी अभिमन्यु का
6. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?
   अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था। लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था। फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ। इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है।
7. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?
   कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है। महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था। उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा।

8. कवितांश का आशय (मै रथ का टूटा हुआ पहिया ..... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री . धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की समस्याएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो टूटा पहिया, टूटे मानवीय मूल्य ही उसका सहारा बन जाएगा। यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की समस्याओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।
बेकार मत समझना। आज के समाज के शोषित जन को शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान भी इसमें है।

9. युद्ध विरुद्ध पोस्टर तैयार करें ।

युद्ध छोडो ... सब मिलजुलकर रहो ...

1. युद्ध विनाशकारी है।
   युद्ध छोडो शांति से रहो।
2. युद्ध से किसीको कोई लाभ नहीं
   युद्ध सर्वनाश है उसको रोको।
3. युद्ध देश को विकास की ओर नहीं,
   विनाश की ओर ले जाता है।
4. युद्ध से दूर रहें ...
   मानवराशी को बचाएँ।
5. बंदूक, तोप, अणुबम आदि का प्रयोग न होने दे ...
   मानव की धन-संपत्ति, घर, बंधुजन आदि का नाश न करने दे।
6. युद्ध की भयानकता समझो
   आगे युद्ध न होने केलिए सब कोशिश करें।

हिरोशिमा दिवस – अगस्त 6

SRGOTHER KOVOOKVARKALA, SCR745 ph- 9567224545

3. टूटा पहिया PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. असत्य -झूठ 2. महारथी - महान योद्धा 3. अकेली - एकाकी 4. आवाज़ - ध्वनि 5. निहत्थी - निरायुध/ शस्त्रहीन 6. हाथ - कर

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कुचल देना – रौंद डालना / शत्रु का सर्वनाश कर देना 2. लोहा लेना – सामना करना / मुकाबला करना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. बडे–बडे महारथी - बडे–बडे 2. निहत्थी आवाज़ - निहत्थी

4. किसका प्रतीक है ?

1. ब्रह्मास्त्र – शासक वर्ग द्वारा अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग/ सर्वनाश/ महाशक्ति
2. महारथी लोग – असत्य और अधर्म / शोषक वर्ग / अन्याय लोग / ऊँचे अन्यायी वर्ग

5. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कविता में किसका पक्ष असत्य का है ?
   बडे बडे महारथी का (कौरवों का)
2. ' अकेली निहत्थी आवाज़ '– यह किसके बारे में कहा गया है ?
   अभिमन्यु के बारे में
3. ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेने में किसने अभिमन्यु की मदद की ?
   टूटा पहिया ने
4. महारथी किसको ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं ?
   अकेली निहत्थी आवाज़ को
5. ' उसके हाथों में ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ '– किसके हाथों में ?
   अभिमन्यु के (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले के)
6. ' अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी '- यह किसके बारे में यह कहा गया है ?
   महारथी के
7. ' सकता हूँ '- क्रिया का सीधा संबंध किससे है ?
   मैं
8. टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है। इससे आपने क्या समझा ?
   शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं। अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है।
9. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
   बडे-बडे महारथी
   अकेली निहत्थी आवाज को
   अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।
   अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है।
10. तब मैं
    रथ का टूटा हुआ पहिया
    उसके हाथों में
    ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?
    चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है। उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा।

11. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री. धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथे के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है। ऐसी अवसर पर मैं, रथ का टूटा पहिया मानवीय मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता हूँ और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

SRIDHAR, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

3. टूटा पहिया PART - 3 (इतिहासों की ----- आश्रय ले)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. सहसा - अचानक 2. सच्चाई - सत्य 3. गति - संचार 4. आश्रय - सहारा 5. सामूहिक - एकत्रित

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. झूठी पड जाना – असत्य सिद्ध होना 2. आश्रय लेना – सहारा लेना

3. विशेषण शब्द लिखें ।

1. सामूहिक गति – सामूहिक

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर सच्चाई किसका आश्रय लेती है ?

टूटे हुए पहियों का

2. ' सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय लेगी '– कब ?

इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर

3. सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! – इससे आपने क्या समझा ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। तब सत्य के पक्ष,आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा।

4. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! - इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा।

5. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री. धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

6. पूरी कविता का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री. धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको। क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा। यानी जीवन की विषमताएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो मैं, टूटा पहिया उसका सहारा हो जाऊँगा। कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी अभिमन्यु को अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहते हैं। चक्रव्यूह में फँस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पडने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथी लोगों के ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति से आम जनता की आवाज़ और ज़रूरतों को कुचल देते वक्त मानव मूल्यों की सहायता से हम उस शोषण से बच पाएँ। टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना। इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है। उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा। यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

REGINA R KOVOOR VAMANA, 9082745 ph- 9502224545

4. आई एम कलाम के बहाने PART -1

(गाँव के स्कूल में मेरा एक साथी था - मोरपाल । ---------- रोज़ पंद्रह किलोमीटर बिना छलकाए लिए आता था ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. बाँछें खिल जाना – प्रसन्न होना/ खुशी से खिल जाना 2. अदला–बदली करना - लेन–देन करना/ विनिमय करना 3. लुक लुक के देखना – छिपकर देखना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं । क्यों ?
   नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से
2. खेलघंटी में मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?
   खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का
3. मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था । कारण क्या होगा ?
   मोरपाल की गरीबी
4. मोरपाल कैसे छाछ लाता था ?
   गाँव से पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर बिना ज़रा भी छलकाए लाता था ।
5. मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा । क्यों?
   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था । इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था ।
6. ‘ हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का ।‘- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?
   सच्ची मित्रता का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच-नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था ।

7. लघु लेख – मित्रता / दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है । जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है । यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है । सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है । यह तो अनमोल धन के समान होता है । इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते । सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है । अमीर- गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है ।

8. टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे । गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे । क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं । खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे । मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था । दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे । पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे । दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था । उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था ।

9. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है । पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं । उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है । स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते । उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है । कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं,पढाई में आगे हैं । पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है । गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं ।

10. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी । स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था । वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था । रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था ।

11. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल । वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था । वह लेखक के पास ही बैठता था । खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था । लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था । अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था । घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था । स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था । उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी,इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था । वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है ।

12. पटकथा (खाने की अदला बदली के बारे में)

स्थान - स्कूल के कमरे में ।
समय - दोपहर के 1 बजे ।
पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है ।
घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं ।

संवाद -

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया ।

HSSLiVE.IN

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPT, Ph-9567224545

मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?

लेखक - यह तो राजमा है। क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?

मोरपाल - नहीं यार। मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ।

लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?

मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ।

लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?

मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है।

लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है।

मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ।

लेखक - ज़रूर। आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं।

मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है। खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ।

लेखक - ठीक है।

(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं।)

13. वार्तालाप को आगे बढाएँ (खाने की अदला बदली के बारे में)

मोरपाल - घंटी बज गई। जल्दी आओ हम साथ खाएँ।

मिहिर - ठीक है। मैं अभी आया।

मोरपाल - कहाँ है मेरा राजमा-चावल ?

मिहिर - यह लो राजमा-चावल, मुझे छाछ दो।

मोरपाल - यह बडा स्वादिष्ठ है यार। छाछ कैसा है ?

मिहिर - बहुत अच्छा है। मोरपाल तुम यह डब्बा इतने दूर से बिना झलकाए कैसे लाते हो ?

मोरपाल - महीनों से आ रहा हूँ न यार। अब्यास हो गया।

मिहिर - जो भी हो, बडे आश्चर्य की बात है। मैं ऐसा नहीं कर पाऊँगा।

14. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : .....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था । मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी । जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है । आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा ।

15. मिहिर का पत्र (मोरपाल के साथ अपनी खाने की अदला बदली)

स्थान: .....

तारीख: .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

तुमको मेरा दोस्त मोरपाल को याद है न ? आज हम खाने केलिए बैठा तो मेरे टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखकर वह बहुत प्रसन्न हो गया । वह राजमा को पहली बार देख रहा था । मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरेलिए सामान्य सी चीज दूसरों केलिए इतनी खास हो सकती है । आज से हमारा सौदा हुआ, खाने की अदला-बदली करने का । उसके घर से लाया छाछ का डिब्बा मुझे दिया और मेरे घर से लाया राजमा -चावल उसको । मुझे लगता है कि अपने घर की गरीब हालत से ही वह राजमा जैसा बढिया दाल खरीद न सकता होगा । मैं हर दिन उसे अपने घर से राजमा लाकर देना चाहता हूँ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे माँ-बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता। नाम

16. पोस्टर (संदेश) – गरीबी विषय पर

देश की उन्नति केलिए

गरीबी

दूर करनी चाहिए।

राष्ट्र निर्माण केलिए गरीबी हटाएँ।

गरीबी देश के सर्वनाश का कारणबनता है।

एक-एक नागरिक का कर्तव्य है गरीबी हटाना।

गरीबी हटाने केलिए सक्रिय भागीदारी करें।

गृह संत्रालय, नई दिल्ली

SREEJITH K, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 2

(मैं स्कूल जाने में रोया करता । ---------- वह से ही शादी में पहनकर आता ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कमरतोड मेहनत करना – अत्यधिक परिश्रम करना 2. हैरान रह जाना – आश्चर्य हो जाना 3. जान पाना – समझ सकना 4. चिढाना – क्रुद्ध बनाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. मोरपाल की पढाई आठवीं के बाद छूट जाता है । इसका कारण क्या है ?
गरीबी के कारण खेती में पिता की सहायता करने केलिए

2. मोरपाल केलिए रविवार की छुट्टी का दिन हफ्ते का सबसे बुरा दिन क्यों होता ?
रविवार को घर पर कमरतोड मेहनत करना पडता है ।

3. लेखक बारिश के दिनों में घर पर नाचा करता था । क्यों ?
उसे स्कूल जाना नहीं पडेगा ।

4. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ?
क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफॉर्म ही थी ।

5. मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा । क्यों?
क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था ।

6. यहाँ मोरपाल और मिहिर के स्कूल जीवन में क्या-क्या अंतर हैं ?
मोरपाल स्कूल आना पसंद करता है । उसको स्कूल में बिताए समय पर ही जीवन के कष्टों को भूलने का अवसर मिलता है । लेकिन मिहिर को स्कूल आना पसंद नहीं है । वह छुट्टी के दिन खुशी से बिताना चाहता है ।

7. मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था । क्यों ?
स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता । स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था ।

8. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?
लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

9. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या–क्या हैं ?
मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था । वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा –चावल खाता था । मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था ।

10. ‘ रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता ।‘- ऐसा क्यों कहा गया है ?
स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था । स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था । रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं ।

11. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।
मोरपाल - नमस्ते ।
मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?
मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।
मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?
मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर ।
मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा ।
मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?
मोरपाल - पसंद है । लेकिन मैं मज़बूर हूँ ।
मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है । कल से तुम भी नहीं हो तो ...
मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो । हम फिर मिलेंगे ।
मिहिर - ठीक है मोरपाल ।

12. वार्तालाप को आगे बढाएँ (मिहिर को स्कूल की छुट्टी पसंद है)

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?
मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?
मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?
मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।
मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।

SREENIVAS KOVOOR VARKALA, 9074545 ph- 9567224545

मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?

मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है।

मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?

मोरपाल – हाँ लाया। तुम राजमा भी लाया है न ?

मिहिर - नहीं भूला। अब हम क्लास में जाएँ। घंटी बजा होगा। क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है।

मोरपाल – ठीक है। जल्दी चलो।

13. वार्तालाप – कई सालों बाद मिहिर मोरपाल से मिलता है

मिहिर – अरे मोरपाल... मोरपाल है न ?

मोरपाल – हाँ ... मेरा मित्र मिहिर।

मिहिर – हाँ ... इधर तू ?

मोरपाल – बाज़ार आया।

मिहिर – अब भी खेती करता है।

मोरपाल – हाँ मित्र ... सब्जी बेचने केलिए आया था। और तू यहाँ ?

मिहिर – इधर एक साहित्य सम्मेलन में आया था।

मोरपाल – वाह ! कितनी अच्छी बात है ! तेरी तस्वीर एक पत्रिका में देखी थी।

मिहिर – पत्रिका में !

मोरपाल – हाँ, मेरी बेटी ने दिखाया। उससे मैं बोला अपनी दोस्ती के बारे में।

मिहिर – कितने बच्चे हैं ?

मोरपाल – बस एक और तेरे ?

मिहिर – मेरा एक बेटा।

मोरपाल – स्कूल जाते समय तेरे जैसा रोता है ?

मिहिर – हाँ, बिलकुल मेरे जैसा। आज भी तेरे छाछ का स्वाद याद करता हूँ।

मोरपाल – तेरे राजमा चावल अब भी मन भरता है।

मिहिर – गाँव आते समय ज़रूर तुझसे मिलूँ।

मोरपाल – मेरी किस्मत।

14. मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)

तारीख : .....

आज मेरेलिए दुखी दिन था। आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ। मेरा परिवार बहुत गरीब है। इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है। अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ। मुझे आगे पढने का शौक है। मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है। उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा। मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी। तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था। आगे मैं क्या करूँ ?

15. मिहिर का पत्र (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ। परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ।

मेरी कक्षा में एक मित्र है, उसका नाम मोरपाल है। सारे दिन मोरपाल मेरेलिए छाछ लाता है। बदले में मैंने उसको राजमा-चावल देता हूँ। आज मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा। मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया। वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है। मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है। मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा। मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था। कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम। छोटे भाई को मेरा प्यार। तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 3

(नील माधव पांडा की ' आई एम कलाम ' देखते हुए मुझे ---------- जिनसे मिलकर हमारे कलाम को कुछ कहना है ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. इशारा करना – संकेत करना 2. नकल करना – अनुकरण करना 3. दिल जीत लेना – आकर्षित करना/ प्रशंसा का पात्र बनना

4. वाहवाही करना – प्रशंसा करना 5. दवा करना – चिकित्सा करना 6. वादा करना – वचन देना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. फिल्म के नायक कलाम को छोटू नाम से क्यों बुलाते हैं ?
क्योंकि ढाणी पर काम करनेवाले बच्चों को ऐसे बुलाते थे ।

2. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?
स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।

3. फिल्म में कलाम क्या कर रहा है ?
भाटीसा की चाय की दूकान में काम कर रहा है ।

4. रणविजय को स्कूल जाना कतई पसंद नहीं है । क्योंकि – ?
परीक्षा का डर दिखाकर भयभीत करता है ।

5. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?
पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है ।

6. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?
वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी ।

7. फिल्म का नायक अपना नाम कलाम रखा । क्योंकि ------- ?
वह कलाम जैसा बनना चाहता है ।

8. छोटू लूसी मैडम का दिल कैसे जीत लेता है ?
विदेशी टूरिस्ट की बोली झट-से सीख जाता है । इस प्रकार वह लूसी मैडम का दिल जीत लेता है ।

9.' छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।' उसकी मंज़िल क्या थी ?
दिल्ली जाकर राष्ट्रपति कलाम से मिलकर अपना पत्र उनको देना और दोस्त रणविजय के साथ स्कूल जाना ।

10. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?
क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है । उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है । वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है ।

11. कलाम को चाय की दुकान में क्यों काम करना पडा ?
वह गरीब परिवार का था ।

12. कलाम और मोरपाल की ज़िंदगी का क्या अंतर क्या है ?
कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था ।

13. ' बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है ।'- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं । फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं ।

14. वार्तालाप – छोटू भाटी सा को चाय बनाकर देने पर

कलाम - प्रणाम भाटी मामा ।
भाटी सा - खुश रहो बेटा ।
कलाम - आप चाय पीजिए ।
भाटी सा - चाय ... तुमने बनाई ?
कलाम - हाँ जी ।
भाटी सा - अरे वाह !
कलाम - कैसे हैं भाटी मामा ?
भाटी सा - इस चाय में जादू है ।
कलाम - आपको पसंद आई ?
भाटी सा - बिलकुल, पहली बार ऐसी चाय पीता हूँ ।
कलाम - सही ?
भाटी सा - यह तो कलाकारी है । इसलिए आजकल ज़्यादा विदेशी लोग इसी दुकान में आते हैं । ज़रूर ऐसा ही होगा ।
कलाम - धन्यवाद भाटी मामा ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 ph- 9567224545

15. छोटू की डायरी (टीवी में राष्ट्रपति कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ.कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

16. कलाम की डायरी – लूसी मैडम उसे दिल्ली ले जाने का वादा करती हैं ।

तारीख : ……

कैसे भूलूँ आज का दिन ? आज लूसी मैडम आई थीं ... इधर चाय की दुकान में । मैंने बढिया चाय बनाकर दी । मुझसे बहुत बातें कीं । मेरी चाय उन्हें भी पसंद है । भाटीसा के समान वे भी बहुत तारीफ करती हैं । विदेशी हैं, फिर भी अपनापन का अनुभव होता है । उनसे कुछ अंग्रेज़ी शब्द सीख लिया है । उनसे बातें करने में कितना मज़ा आता है । आज उन्होंने वादा की ... " मुझे दिल्ली लेकर जाएँगी " " मुझे पढाएँगी " बहुत खुश हूँ मैं ... बहुत खुश हूँ ।

17. कलाम और रणविजय की दोस्ती पर टिप्पणी

आई एम कलाम फिल्म का नायक छोटू उर्फ कलाम का दोस्त था ढाणा के राणा के बेटा रणविजय । कलाम गरीब लडका था तो रणविजय संपन्न परिवार का । दोनों के बीच घुडसवारी सीखना और पेड पर चढना सिखाने के लेन -देन को लेकर दोस्ती हो जाती है । रणविजय कलाम को अंग्रेज़ी सिखाने में मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । रणविजय के मन में अमीर होने का कोई भाव नहीं था । दोनों अपने संकट तथा आशाएँ आपस में बाँटते थे । दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार भी करते थे । कलाम की किताब और कपडे जला देने पर रणविजय उसको अपनी किताब और कपडे देता है । कलाम की मदद से रणविजय स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार जीतता है । अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाए जाने पर दोस्त को बचाने केलिए कलाम उस आरोप को सह लेता है । कलाम अपनी दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला था । अंत में रणविजय की मदद से कलाम उसके साथ अपने पसंद के स्कूल जाकर पढने में सफल बनता है । इस तरह हम उनमें दो अच्छे दोस्त को हम देख सकते हैं ।

18. टिप्पणी - छोटू उर्फ कलाम की चरित्रगत विशेषताएँ

' नील माधव पांडा ' की ' आई एम कलाम ' फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन, बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है ।

19. टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था । पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था । कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था । कलाम चाय की दुकान में काम करता था । रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था । रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था । कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी । कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे । रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था । कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था ।

20. पोस्टर – फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै
वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन – जिलाधीश
अध्यक्ष – क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन
आई एम कलाम
प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से 4 बजे तक
आइए ... देखिए ... मज़ा लूटिए ...
" छोटू और रणविजय की दोस्ती
सबके दिल जीत लेंगे "

SREENIVASA KOVOOR VIRKALA, CELL: 9500245945

4. आई एम कलाम के बहाने PART - 4

(एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने ---------- मंज़िल मिलती है।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. परेशान होना – दुखी बनना 2. तलाशी लेना – अन्वेषण करना 3. आरोप लगाना – इल्ज़ाम लगाना/ दोष लगाना
4. तय करना – निश्चय करना 5. प्रण तोडना – प्रतिज्ञा का लंघन करना 6. मंज़िल मिलना - लक्ष्य प्राप्त करना

2. हम – से जुडे शब्द और अर्थ

1. हमनाम – समान नामवाला	2. हमउम्र – समान उम्रवाला	3. हमअसर – समान असरवाला
4. हमख्याल – समान मतवाला	5. हमजोली – समान ओहदेवाला	6. हमजिंस – समान जाति का
7. हमपेशा – समान काम करनेवाला	8. हम मज़हब – समान धर्म का	9. हम वतन – समान देश का
10. हम शक्ल – समान आकार का		

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. फिल्म के अंत में कलाम क्या तय करता है ?
वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा।

2. कलाम दिल्ली में जाना क्यों चाहता है ?
अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ. कलाम को खुद देने।

3. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?
वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से।

4. छोटू ने रणविजय की दोस्ती के बारे में राणा-सा के कारिंदे से नहीं बताया। क्यों ?
छोटू और रणविजय की दोस्ती के कारण रणविजय को दंड मिलेगा। इसी डर से छोटू ने उनकी दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया। यह भी नहीं कि छोटू, रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता।

5. छोटू ने चोरी का आरोप सहन किया। क्यों ?
दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है।

6. भाषण देने में रणविजय की परेशानी क्या है ?
उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी।

7. ‘ लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता।‘- इससे आपने क्या समझा ?
चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं। टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है। स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है।

8. ‘ लेकिन कलाम फिर कलाम है ’- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें।
राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है। रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है। अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं।

9. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?
रणविजय - कुछ नहीं छोटू।
कलाम - क्या बात है ? जो भी हो, हल हो जाएगा।
रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है।
कलाम - वह अच्छी बात है न ?
रणविजय - बात यह है छोटू ... मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है।
कलाम - यही बात है न ... ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा।
रणविजय - कैसे ?
कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो।
रणविजय - ज़रूर। बहुत बहुत धन्यवाद छोटू।
कलाम - तुम मेरा मित्र हो न ... मुझसे धन्यवाद कहने की कोई आवश्यकता नहीं।
रणविजय - ठीक है यार।

10. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : ---------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई। इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था। इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है। कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी। यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है। पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई।

SPEEMER KOVOOR VARKALA SCP745 Mob- 9567224545

11. कलाम के नाम रणविजय का पत्र (भाषण प्रतियोगिता जीतने पर कलाम की मदद के बारे में)

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रहा हूँ ।

तुम्हारी मदद से आज मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला। सभी लोगों ने मेरी तारीफ की। लेकिन मेरे मन में तुम्हारा चेहरा था। मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी। इस भाषण के बारे में बताते वक्त तुमने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था। वह भाषण कितना आकर्षक था। दूसरों की खुशी चाहनेवाला तेरा मन कितना बडा है कलाम। मैं तुम्हारा आभारी हूँ । एक दिन तुमसे मिलने आऊँगा।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

12. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख : .....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन। मेरा सपना साकार हो गया। स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया। स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ –साथ चले। क्लास में उसके साथ बैठकर पढा। स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई। याद आया , चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था। लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था। चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था। लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं। अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा। अच्छी तरह पढ-लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा।

13. कलाम की डायरी (राणा के कारिंदे ने उसपर चोरी के आरोप लगाने से वह दुखी होकर)

तारीख : .....

आज मेरेलिए दुखी दिन था । आज ढाणी के राणा के कारिंदे मेरे घर में आए । यहाँ तलाशी लेने पर उनको कुँवर रणविजय की चीज़ें मिली । ये चीज़ें मेरेलिए रणविजय ने ही दी थी । लेकिन राणा के कारिंदे ने मुझपर चोरी का आरोप लगाया । मुझे उनसे सज़ा मिली । मैंने नहीं बताया कि ये चीज़ें रणविजय ने मुझे दी हैं । यह बताएँ तो रणविजय को मेरी दोस्ती के नाम पर दंड मिलेगा । इसलिए मैं चुपके से दंड स्वीकार किया । मैं कुँवर रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता हूँ । आज का दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

14. रणविजय की डायरी (भाषण जीतकर आने पर कलाम चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली जाता है)

तारीख : .....

आज कलाम की मदद से मुझे भाषण में प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला । सभी लोगों ने मेरी तारीफ की । लेकिन मेरे मन में उसका चेहरा था । मुझे मालूम है मेरी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस भाषण के बारे में बताते वक्त उसने झट से एक अच्छा-सा भाषण लिखकर दिया था । वह भाषण कितना आकर्षक था । दूसरों की खुशी चाहनेवाला उसका मन कितना बडा है ! पर क्या करूँ ? ट्रॉफी लेकर उसे दिखाने आया तो पता चला कि वह चोरी के आरोप में गाँव छोडकर दिल्ली गया है । मैं दुख सह न पाया । सच में मुझे बचाने केलिए उसने वह चोरी का आरोप सह लिया था । दोस्ती को इतना ऊँचा स्थान देनेवाले मित्र को मैं कैसे खोऊँ ? मेरे पापा से सच बताने पर उन्होंने कलाम को ढूँढकर लाने की अनुमति दे दी । कल मैं उसकी तलाश में दिल्ली जाऊँगा । वापस आकर उसे भी मेरे स्कूल में भर्ती कराना है । ऐसे हम एक साथ स्कूल बस में स्कूल जाएँगे । वह कितना खुश होगा ! उसकी मंज़िल की पूर्ति करना अब मेरा ही दायित्व है ।

15. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ, जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है , मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है ।

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

16. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

SREENATH R KOVOOR VARKALA SOCIALS Ph.9562024545

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है। कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे। कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया। पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा। मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया। इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता । नाम

17. कलाम का पत्र (अपनी सफलता के बारे में) स्थान : .....

तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ । परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ ।

आज मेरेलिए अविस्मरणीय दिन है । वर्षों से होनेवाला मेरा सपना आज सफल हुआ । मेरी इच्छा थी कि दिल्ली जाकर कलाम जी से मिलना । विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम ने मुझसे कहा था कि वे मुझे दिल्ली ले जाएँगी । कलाम जी से मिलने का अवसर भी देगी । उस समय तक इंतज़ार करने की क्षमा मुझे नहीं थी । इसलिए मैं अकेला दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं । कलाम जी के नाम पर लिखी चिट्ठी मेरी जेब में थी । वह कलाम जी के हाथ में दी । कलाम जी के साथ खडे होकर एक फोटो भी लिया । यह अनुभव वर्णनातीत है । अब मैं दिल्ली में हूँ ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम । छोटे भाई को मेरा प्यार । तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में, तुम्हारा मित्र

नाम (हस्ताक्षर)

पता । नाम

18. समाचार (रपट) – ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म में छोटू का सपना साकार होने के बारे में
गरीब बालक का सपना पूरा हुआ

स्थान : .....चाय की दुकान में काम करनेवाला एक गरीब बालक का सपना पूरा हुआ । छोटू उर्फ़ कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम-सा बनना । स्कूल में पढाई करने के लिए उसको बडा शौक था । चाय की दूकान में काम करते समय विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम से परिचय हुआ, उन्होंने छोटू को दिल्ली ले जाने का वादा किया था । लेकिन छोटू अकेला ही दिल्ली गया । रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं। अंत में कलाम जी से मिला। कलाम जी ने छोटू की पढाई के लिए सहायता करने का वादा किया। छोटू कलाम जी से बहुत आभारी है ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR145 Ph- 9562021545

5. सबसे बडा शो मैन PART 1

(गाते-गाते अचानक माँ की आवाज़ फटकर ---------- गाना सजने लगा ।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. तब्दील हो जाना– बदल जाना/ परिवर्तित होना 2. मज़बूर करना – विवश करना 3. ज़िद करना – हठ करना 4. डर जाना – भयभीत होना
5. बहस करना – वाद-विवाद करना 6. आवाज़ फट जाना – स्वर खराब होना 7. रोक देना – बंद करना 8. झेल पाना – संभाल पाना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. लोग क्यों चिल्लाने लगे ?
गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से ।

2. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?
गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।

3. चार्ली परदे के पीछे खडा होकर आवाज़ के तमाशे को देख रहा था । यहाँ तमाशा क्या थी ?
चार्ली की माँ स्टेज पर गाना गाते समय उनकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग म्याऊँ- म्याऊँ की आवाज़ निकालने लगे । चार्ली को माँ का यह हाल तमाशा जैसे लगा ।

4. कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे । क्यों ?
पाँच साल का चार्ली मशहूर गीत जैक जोन्स गाना अपने तरीके से गाना लगा । इस कारण ऑर्केस्ट्रावाले असमंजस में पडे रहे, बाद में वे चार्ली के गाने की धुन के अनुसार गाना सजने लगे ।

5. माँ और मैनेजर के बीच बहस क्यों हुआ ?
मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले जाने की ज़िद को लेकर

6. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?
मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था । इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा ।

7. चार्ली को स्टेज पर भेजने से माँ क्यों डर गई ?
पाँच साल का उसका बेटा शोर मचाती इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ।

8. चार्ली को स्टेज पर क्यों जाना पडा ?
गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई । तब मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा तो उसको स्टेज पर जाना पडा ।

9. स्टेज पर पहली बार चार्ली ने कौन-सा गीत गाया ?
जैक जोन्स

10. इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया । उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?
जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा । किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है । उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन –पोषण करेगी ।

11. ' पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था '– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?
चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा ।

12. पटकथा (माँ और मैनेजर के बीच का बहस)

स्थान - एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे ।
समय - रात के 7 बजे ।
पात्र - मैनेजर, करीब 50 साल का, पतलून और कमीज़ पहना है ।
चार्ली की माँ, करीब 45 साल की, चुडीदार पहनी है ।
घटना का विवरण - गाते समय गले की खराबी से मंच के पीछे आई माँ से मैनेजर बातें करने लगता है । दर्शक शोर मचा रहे हैं ।

संवाद –

मैनेजर - हेन्ना जी क्या हुआ ?
माँ - जी ... मेरा गला खराब हो गया है ।
मैनेजर - और एक बार कोशिश करो ।
माँ - कोई फायदा नहीं ।
मैनेजर - देखो लोग शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शांत कराना होगा ।
माँ - हे भगवान , अब मैं क्या करूँ ?
मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । मैं एक बात कहूँ ? तुम मानोगी न ?
माँ - बताइए ।
मैनेजर - आपका बेटा है न चार्ली ... उसको स्टेज पर भेजो, वह कुछ करके दिखाएगा ।
माँ - चार्ली ! आप यह क्या कह रहे हैं ?
मैनेजर - मैंने उसका अभिनय देखा है । बडा होशियार है । इसलिए कह रहा हूँ ।
माँ - पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ? मुझे गर लगता है ।
मैनेजर - घबराओ मत, मुझे उस पर विश्वास है ।
माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCR745 Mob- 9567224545

(माँ चार्ली के पास जाती है और उससे मैनेजर के साथ स्टेज पर जाकर कुछ करने की अनुरोध करने लगती है।)

13. वार्तालाप को आगे बढाएँ

मैनेजर – हेन्ना जी ... आपको क्या हो गया ... ?
माँ – जी ... नहीं मालूम ... मेरी आवाज़ फट जाती है।
मैनेजर – आपने गाना क्यों छोड दिया ... ?
माँ – माफ कीजिए ... मैं गा नहीं सकती।
मैनेजर – अब क्या करें ? लोग बहुत शोर मचा रहे हैं।
माँ – आप ही बताइए , मुझे क्या करना है ?
मैनेजर – चार्ली को स्टेज पर भेज दूँ ?
माँ – चार्ली को ? नहीं ... वह तो छोटा बच्चा है न ?
मैनेजर – तो क्या ? मैंने उसे आपके कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा है।
माँ – लेकिन वह तो कमरे के अंदर था। इस उग्र भीड को वह कैसे संभालेगा ?
मैनेजर – आप चिंता न कीजिए , चार्ली एक होनहार बच्चा है न ? वह ज़रूर इस भीड को शांत करेगा।
माँ – तो ठीक है, आपकी मर्ज़ी।

14. पटकथा (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है।)

स्थान – एक ओडिटोरियम में, मंच के पीछे।
समय – रात के 7 बजे।
पात्र – चार्ली, पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है।
माँ, करीब 45 साल की औरत, चुडीदार पहनी है।
घटना का विवरण – मैनेजर की ज़िद के कारण माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है।

संवाद –

माँ – चार्ली बेटा ...।
चार्ली – क्या है माँ क्या हुआ ?
माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं। उन्हें शांत कराना है।
चार्ली – मैं क्या करना है बताइए ?
माँ – मैनेजर साब कहता है तुम स्टेज पर जाकर कुछ करो।
चार्ली – मैं ? मुझे क्या आता है ?
माँ – मेरे दोस्तों के सामने जो किया वही स्टेज पर जाकर करो।
चार्ली – इतना है तो मैं करूँगा माँ।
माँ – तो मेरे साथ चलो बेटा।
चार्ली – ठीक है माँ।
(माँ उसे मैनेजर के पास पास ले जाता है।)

15. पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 7 बजे से
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में

प्रवेश टिकट से :

सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

SREEJITH R KOVOOR VARKALA, SCR745 ph- 9567224545

5. सबसे बडा शो मैन PART 2

(गाना अभी आधा ही हुआ था ..... उसने जन्म ले लिया था।)

1. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. पैसों की बौछार शुरू हो गई – पैसों की वर्षा होने लगी 2. गुदगुदी फैलाना – उल्लासित करना/ पुलकित करना 3. नकल उतारना – अनुकरण करना
4. तारीफ करना – प्रशंसा करना/ अभिनंदन करना 5. जन्म लेना – पैदा होना/ मशहूर हो जाना 6. हवाला करना – हाथ में सौंप देना
7. ठहाका मारना – ज़ोर से हँसना 8. लग जाना – साथ जाना 9. हाथ मिलाना – हस्तधारण करना 10. बटोरना – इकट्ठा करना / एकत्रित करना
11. गाना सजने लगा – गाना अच्छा होने लगा 12. शुरू होना – आरंभ होना

2. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. चार्ली ने बीच में गाना क्यों रोक दिया ?
चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । उन पैसों को बटोरने केलिए उसने बीच में गाना रोक दिया ।
2. बीच में गाना बंद करके चार्ली ने क्या घोषणा की थी ?
पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा
3. मैनेजर रूमाल लेकर स्टेज पर क्यों आया ?
पैसे बटोटने केलिए
4. चार्ली क्यों मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ?
क्योंकि उसे लगा कि मैनेजर सारे पैसे खुद लेना चाहता है ।
5. लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ क्यों की ?
उसने अपनी मासूसियत से जनता में गुदगुदी फैला दी थी ।
6. दर्शकों की हँसी क्यों बढ गई ?
क्योंकि चार्ली रूमाल की पोटली में पैसे बाँध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ।
7. चार्ली ने लोगों में गुदगुदी फैला दी । कैसे ?
चार्ली का गाना सुनकर लोग पैसे फेंकने लगे तो वह गाना रोककर पैसा बटोरने लगा । मैनेजर पैसे बटोरकर बैकस्टेज जाने लगे तो शिकायत करते हुए उनके पीछे चला । वे पैसे की पोटली माँ को देने तक चार्ली वापस नहीं आया । उसके इन व्यवहारों ने जनता में गुदगुदी फैला दी । वे उसकी मासूमियत, प्रस्तुती और प्रवृत्तियों को स्वीकार कर रहे थे ।
8. लोगों ने माँ से क्यों हाथ मिलाया ?
चार्ली की मासूमियत से प्रभावित होकर
9. दर्शकों ने चार्ली का अभिनंदन कैसे किया ?
दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की ।
10. दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ क्यों बजाईं ?
चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।
11. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?
पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया । उसने जनता में गुदगुदी फैला दी । इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया ।
12. ‘ चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ... ।‘ माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?
चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी । विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा । गले का दर्द बढ रही थी । उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था । इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा ।
13. ‘ इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।‘– क्यों ?
चार्ली गीत गाते समय स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । गाना रोककर उसने अपने बाल सहज भोलापन से घोषणा की कि अब पैसे बटोरकर ही मैं आगे गाऊँगा । इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।
14. ‘ उसने जन्म ले लिया था ।‘– इससे क्या मतलब है ?
स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया । इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता । इसलिए ऐसा कहा गया है ।

15. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : ..... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा । इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

HSSLiVE.IN
SREEJITH KOVOOR VARKALA, SCERT45 Mob- 9567224545

16. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !
चार्ली – लेकिन मैं खुश नहीं हूँ अम्मा ।
माँ – क्या हुआ बेटा ?
चार्ली – आप पर लोगों ने ...
माँ – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?
चार्ली – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?
माँ – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...
चार्ली – ऐसा न कहो माँ ।
माँ – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

17. माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : .....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

18. मैनेजर की डायरी

तारीख : .....

आज मेरेलिए कैसा दिन था,बता नहीं सकता । गायिका हेन्ना को गाते वक्त गले की खराबी के कारण स्टेज छोडना पडा उसकी जगह उसके पाँच साल के बच्चा चार्ली को स्टेज पर लाया गया । उसने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर,बातचीत करके,नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराया । माँ के हटने से मैं डर गया था कि लोगों को कैसे शांत करेगा । पर चार्ली ने मेरी रक्षा की । आज चार्ली एक शो मैन बन गया है । आगे भी वह शो में कमाल करेगा ।

19. चार्ली का पत्र (अपनी पहली शो)

स्थान : .....
तारीख : .....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? कुशल हो न? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा । लोग बहुत शोर मचा रहे थे । पहले मैं बहुत डर गया था । फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी । फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था । मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है? तुम कब यहाँ आओगे? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

20. पोस्टर - चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन

सरकारी हाईस्कूल,कोल्लम
फिल्मोत्सव 2020
हिंदी समिति के नेतृत्व में
चार्ली चैप्लिन के फिल्मों का प्रदर्शन
2020 जनवरी 26 रविवार को
सुबह 10 बजे से स्कूल सभाभवन में
उद्घाटन – एम.एल.ए
प्रदर्शन के फिल्में : 1. दि सरकस (सुबह 11 बजे)
2. मॉडेन टाईमस (दोपहर 2 बजे)
3. सिटि लाईटस (शाम 5 बजे)
आइए ... देखिए ... मज़ा लूटिए ...
विश्व कलाकार चैप्लिन के फिल्मों को देखने का अवसर त्याग न दें ।

HSSLiVE.IN

SREEJITH.R KOVOOR VARKALA, SCERT KERALA Ph- 9539224545